स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में सार्वभौमिक व्यवस्था

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

भारत वर्तमान समय में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। भारत एक ओर अर्थव्यवस्था में गति बहुत धीमी दिख रही है वहीं समाज में नारियों के प्रति अपराध बढ़ते जा रहे हैं। आर्थिक उन्नति के साथ–साथ धनी और निर्धन वर्ग के बीच का अंतर उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में स्वामी विवेकानन्द जी के विचार राष्ट्र एवं युवाओं के लिये प्रेरणास्रोत हो सकते हैं। स्वामी जी की वाणी मानव जीवन में व्यापक श्रेष्ठता लाने में सक्षम है। ऐसा इसलिये है क्योंकि स्वामी विवेकानन्द स्वामी जी की प्रेरणा बुनियादी मूल्यों पर आधारित है। जैसे श्रद्धा, साहस, त्याग सेवा इत्यादि। स्वामी जी ने कहा था मैं चाहता हूं कि मेरे सारे शिष्य मुझसे भी कई गुना महान बनें। आज्ञा का पालन करना, तत्परता और आदर्श के प्रति प्रतिबद्धता, अगर तुममें यह तीन गुण हैं तो तुम्हें कोई सफलता प्राप्त करने से रोक नहीं सकेगा।

तेजी से वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में प्रवेश कर रहे भारत की बदलती हुई पृष्ठभूमि में पुराने मूल्यों का नीर–क्षीर विश्लेषण और उनकी प्रासंगिता का विवेचन उतना ही जरूरी है जितना यह प्रश्न कि हमारे नये मूल्य किस अर्थ में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के अभिन्न अंग होंगे और किन मायनों में भिन्न। यहॉ एक प्रश्न यह भी है कि क्या वास्तव में समाजवादी व्यवस्था ने विज्ञान और पूंजीवाद के गठजोड़ को समाप्त कर संस्कृति को नई दिशा दी है ? स्वामी विवेकानन्द के विचार इस विश्लेषण को कहां तक प्रभावित करते हैं? दरअसल आज हम वास्तविक समस्याओं का हल खोजने के बजाय अन्यत्र ही उसका समाधान ढूंढ रहे हैं। आज हमारी समस्याएं राजनैतिक से कहीं अधिक सामाजिक भी हैं। आज जिस अर्थ में कुछ लोग या संगठन राष्ट्रवाद को परिभाषित कर रहे हैं वस्तुतः विवेकानन्द की दृष्टि में राष्ट्रवाद का वह अर्थ बिल्कुल नहीं था। राजेन्द्र यादव ने तो आज के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को पश्चिमी उपनिवेशवादियों का "ओरियेन्टेलिज़्म" कहा है, जो अपनी सामाजिक बनावट में शुद्ध सामन्तवादी है क्योंकि वह गैर बराबरी और शोषण, दमन को धार्मिक आधार देता है।

स्वामी विवेकानन्द का जीवन और पहाड़ जैसा विराट आपका व्यक्तित्व व आपके द्वारा किए गए कार्य संपूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। इसीलिए 150 वर्षों के इतिहास में आज भी आपका चिंतनआज भी प्रासांगिक है। स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों पर दृष्टिगत हों तो आप अपने समय से बहुत आगे थे। आपका विचार था कि विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों के बीच संवाद हो। आप विभिन्न मतों–पंथों की अनेकरूपता को जायज मानते थे। वर्तमान समय के अनेक विवादों और कलह से ग्रस्त लोगों के लिए स्वामी विवेकानन्द जी के विचार बड़े महत्व के हैं। आपका यह मानना था कि वेदांत दर्शन न तो ब्राह्मण दर्शन है न बौद्ध न ईसाई न मुस्लिम, यह इन सभी धर्मों का सार तत्व है। 11 सितम्बर सन् 1893 ई0 को शिकागो के धर्म सम्मेलन में दिए गए अपने ऐतिहासिक

भाषण में स्वामी जी ने स्पष्ट किया था कि–ईसाइयों को न तो हिन्दू या बौद्ध होने की आवश्यकता है और न ही हिंदुओं या बौद्धों को ईसाई बनने की आवश्यकता है। लेकिन प्रत्येक को दूसरों की आत्मा से जुड़ना है और अपनी व्यक्तिगत विशेषता को बरकरार रखते हुए अपनी विकास विधि से आगे बढ़ना है। स्वामी विवेकानंद के पास विभिन्न धर्मों तथा मतों के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए समुचित तर्क भी हैं। आपका विश्व सम्मेलन में यह कहना कि–यदि कोई सोचता है कि उसी का धर्म पले–बढ़े और दूसरों के धर्म नष्ट हो जाएँ तो ऐसे लोगों की दुर्बुद्धि पर मुझे दया आती है। मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि बहुत जल्द ही तमाम बाधाओं के बावजूद प्रत्येक धर्म के बैनर पर लिखा जाएगा 'लड़ो नहीं, मदद करो', विनाश नहीं, सर्जना करो, 'वैमनस्य नहीं सौहार्द्र और शान्ति से रहो। शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द द्वारा दिया गया भाषण आपकी आध्यात्मिक सम्पदा की श्रेष्ठता और प्रचुरता की घोषणा का दस्तावेज है।

स्वामी विवेकानन्द ने मार्क्स व एंगेल्स के सर्वहारावादी वैज्ञानिक समाजवाद की आधारभूत हिंसक क्रान्ति की अवधारणा को भारतीय मॉडल के समाजवाद में ढालने का पुरजोर प्रयास किया था। स्वामी जी ने भारत की तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति का चिंतन–मनन करते हुए अपने विचारों द्वारा लोगों के समक्ष स्पष्ट किया था कि भारत में समाजवाद लाने के लिए हिंसात्मक क्रांति की जरूरत नहीं है। वास्तविक रूप में इसका उदय सांस्कृतिक चेतना और परस्पर सम्मान की भावना से होगा। आपने समाजवाद को व्यक्तिवाद के विपरीत रूप में देखा, पूंजीवाद के विपरीत रूप में नहीं। स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में जो सिद्धांत व्यक्ति को साध्य और समाज को साधन मानता है वह व्यक्तिवाद है इसके विपरीत, जो सिद्धान्त समाज को साध्य और व्यक्ति को साधन मानता है वह समाजवाद है। समाजवाद जनसाधारण की उन्नति की मांग करता है और इसका मुख्य साधन शिक्षा है। आपका मानना था कि सच्ची शिक्षा वह है जो चरित्र का निर्माण करती है, बुद्धि बल को बढ़ाती है, और मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती हैं। आपने एक आदर्श समाजवाद को अपने विचारों की प्रतिभा के अनुसार एक नये भारत के लिए मजबूत नींव डाली थी। अब देश में जन साधारण को शिक्षा को अमृत पिलाने के लिए भारत के शिक्षित वर्ग को आगे आना चाहिए तभी स्वामी जी के सपनों को हकीकत की महक मिलेगी।

नरेन्द्र नाथ दत्त जो बाद में स्वामी विवेकानन्द कहलाए, की पूरी जिन्दगी आपके सारे कार्य और आपकी सोच हमेशा से ऐसी रही मानो न तो आपमें कभी बचपन आया और न ही कभी बुढ़ापा। जवानी जो एक बार आ गई, तो फिर कभी गई ही नहीं। आप 'चिरयुवा' रहे इसीलिए लगातार युवाओं को संबोधित करते रहे, आपके कुछ विचारों को समझने के लिए बड़े–बूढ़ों को भी काफी मशक्कत करनी पड़ जाती है। युवापन यानी ऊर्जा से लबालब जीवन की एक अवस्था। स्वामी विवेकानन्द ने जीवन को परिभाषित करते हुए अपने परम मित्र खेतड़ी, राजस्थान के राजा अजीत सिंह से कहा था कि ''सतत् प्रतिकूल स्थिति श्रृंखलाओं के विरूद्ध आत्म प्रकाश और आत्म विकास की कोशिशों का नाम ही जीवन है।''स्वामी विवेकानन्द जी की दिव्यदृष्टि कहती थी कि राष्ट्रनिर्माण का महान कार्य भारतीय युवकों के कंधों पर ही संपूर्ण रूप से निर्भर है। यदि भारत के युवा 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के मंत्र को जीवन का अंग बना लेंगे तो किसी की सामर्थ्य नहीं कि उनकी राह को कोई रोक सके। इसलिए आपका कहना था कि आज ''आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, श्रद्धासंपन्न और दृढ़ विश्वासी, निष्कपट युवकों की जो सच्चे हृदय से राष्ट्रनिर्माण का व्रत ले सकें तथा उसे

ही अपना एकमात्र कर्तव्य समझें। जो साहसी हों, पुरूषार्थी, क्षात्रवीर्य से संपन्न हों। जो नाम, यश अथवा अन्य तुच्छ विषयों के प्रति आकर्षित न हों, स्वार्थहीन हों तथा आत्मविश्वासी हों तथा जो क्षमताप्रिय और ईर्ष्या से मुक्त हों। मैं जो चाहता हूँ वे हैं लोहे की नसें और फौलाद के स्नायु, जिनके भीतर ऐसा मन वास करता हो, जो कि वज्र के समान पदार्थ का बना हो। ऐसे सौ मिल जाएँ तो संसार का कायाकल्प हो जाएगा।'' विवेकानंद ने अपनी पूरी ऊर्जा भारत को समृद्ध बनाने में लगा दी थी। आपने युवाओं को सही रास्ते पर लाने के लिए उन्हें आध्यात्मिक रंग में सजी होली के समान सजाया। स्वामी विवेकानंद ने धर्म और दर्शन में एक नया जोश भरा। सम्पूर्ण राष्ट्र इस महापुरूष की याद में ही 12 जनवरी को 'युवा दिवस' बड़े उत्साह के साथ मनाता है तथा जो इस महापुरूष की आंखों ने सपने देखे थे, उन्हें पूरा करने के लिए प्रयासरत है। आज भी ऐसे ही महान व्यक्तित्व की जरूरत है भारतीय संस्कृति की अस्मिता को बचाने के लिए जो लगातार पतन की गर्त में जा रही है।

स्वामी विवेकानंद संयास लेकर हिमालय की किसी गुफा में जाने की बजाय वह गरीब और उपेक्षित लोगों के बीच गए और उनके लिए अनेक कार्य किये। आपने साफ तौर पर घोषणा की थी कि मैं यह नहीं स्वीकार करता कि जो ईश्वर मुझे यहाँ रोटी नही दे सकता वह स्वर्ग में मुझे अनंत सुख दे सकेगा। यह कहने में वह तनिक भी नहीं हिचके कि भूख से अधमरे व्यक्ति को धार्मिक सिद्धांतों की घुट्टी पिलाना उसके आत्मसम्मान पर आघात करना है। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि गरीबी की समस्या को सुलझाए बिना, जनता को नैतिक और बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाए बिना, उन्हें स्वावलंबी बनाए बिना कोई भी धर्म कारगर नहीं हो सकता। इसीलिए आपने रहस्यवाद जैसे पलायनवादी सिद्धांतों की जमकर खिल्ली उड़ाई। स्वामी विवेकानंद ने जातिगत उत्पीड़न की आलोचना की और आत्मा तथा ब्रह्म में आस्था रखने के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच सामाजिक बंधनों को अस्वीकार किया। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने लिखा कि ''यदि प्रकृति में असमानता है, तो भी सबके लिए समान अवसर होना चाहिए – अथवा कुछ को कम और कुछ को अधिक अवसर देना है, अर्थात् दुर्बलों को सबलों से अधिक अवसर दिया जाना चाहिए क्योंकि ब्राह्मण को शिक्षा की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी चाण्डाल को। जैसे– ब्राह्मण को एक अध्यापक तो चाण्डाल को दस अध्यापक की आवश्यकता है, क्योंकि जिसको प्रकृति ने जन्म से सूक्ष्म बुद्धि दी है उसे अधिक सहायता दी जानी चाहिए। समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विवेकानन्द हिंसात्मक सामाजिक क्रान्ति का समर्थन करने के लिए तैयार नहीं थे। वे अध्यात्म के द्वारा मनुष्य में चरित्र की शुद्धता तथा भ्रातृत्व की भावना का बढ़ाने का अथक प्रयास करने की बात करते हैं।

स्वामी विवेकानन्द का चिंतन न्याय, प्रेम तथा सार्वभौमिक करूणा के शाश्वत संदेश को प्रतिपादित करता है।''मैं उस धर्म को नहीं मानता जो किसी विधवा माता के आंसू न पोंछ पाता हो अथवा अनाथ बच्चे बच्चियों के मुंह में निवाले नहीं दे पाता। इतनी तपस्या के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि ईश्वर हर एक जीव में मौजूद है इसके अतिरिक्त मैं किसी भगवान को नहीं जानता, जीव सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। इस तरह स्वामी विवेकानन्द जी ने जीवन भर मानव सेवा करने का संकल्प लिया।

संदर्भ ग्रथ सूची

- स्वामी विदहात्मानन्द, स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता।
- स्वामी स्मरणानन्द, श्री राम कृष्ण ज्याति, श्री रामकृष्ण आश्रम, राजकोट।

- पाण्डेय, डा0 रामशकल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- डॉ0 वर्मा, वी0पी0 : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक, 1971
- माथुर, प्रदीपः भारतीय राजनीतिक विचारक, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2010
- गुप्त, राजेन्द्र प्रकाश : स्वामी विवेकानंद व्यक्ति और विचार, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1997
- अनिल कुमारः स्वामी विवेकानंद, किताब घर, दिल्ली, 1975
- जैन, यशपालः राष्ट्र की विभूतियाँ, रसभारती, मुरादाबाद, 1977
- डॉ0 मिश्र, आर0डी0 : नव वेदांत और स्वामी विवेकानंद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर, 2005
- टण्डन, एस0सी0ः भारत के गौरव रत्न, पलक प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007
- विवेकानंद, राजेंद्र मोहन भटनागर, राजपाल एण्ड संस नई दिल्ली 2007
- आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन,डा0 वी0पी0 वर्मा, लक्ष्मी नारायन अग्रवाल, आगरा 2003
- भारतीय राजनीतिक चिंतन, उर्मिला शर्मा, एस0 के0 शर्मा, एटलांटिक पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 2001